सत्यदृष्टि ही सम्यग्दृष्टि

अहा ! सत्यदृष्टि ही सम्यग्दृष्टि है। भगवान आत्मा त्रिकाली परिपूर्ण सत् है। अहाहा.... ! अनन्तगुणों का पिण्ड चैतन्य रसकन्द भगवान आत्मा त्रिकाली सत् का पूर्ण सत्व है। जिसको उसकी दृष्टि हुई है, वह जीव सम्यग्दृष्टि है।

ज्ञानी जीव को ऐसी जरा भी शंका नहीं है कि मैं कर्म से बंधा हूँ अर्थात् निश्चय से 'मैं बंधा ही नहीं हूँ' ह्न ऐसी जिसकी श्रद्धा है, वह सम्यग्दृष्टि है। अहा ! यही वस्तुस्वरूप है। 'मैं बंधा हूँ' ह्न ऐसी शंका तो मिथ्याभाव है। भगवान आत्मा राग या कर्मभाव से बंधा नहीं है। वह तो अबद्धस्पृष्ट है तथा मैं भी एक भगवान आत्मा होने से अबद्धस्पृष्ट हूँ ह्न ऐसा ज्ञानी अपना स्वरूप जानता है, अनुभवता है ।

अरे भाई ! अबद्धस्पृष्ट प्रभु आत्मा राग के सम्बन्ध से कैसे बंध सकता है, नहीं बंध सकता। जो परद्रव्य से सम्बन्ध रखता है, वह बंधता है। पर आत्मा तो परद्रव्य के सम्बन्ध से रहित ही है।

'मैं कर्म से बंधा हूँ' ह्न ऐसा मानना ही संदेह या शंका नामक दोष है और यही मान्यता मिथ्यात्व है। मैं तो कर्म व राग के सम्बन्ध से रहित अबद्ध-मुक्तस्वरूप ही हूँ ह्न ऐसा मानना व अनुभव करना ही सम्यग्दर्शन है। दूसरे तरीके से कहे तो मेरा स्वद्रव्य कर्म के सम्बन्ध में है ह्न ऐसा सन्देह ज्ञानी को नहीं होता; क्योंकि एक ज्ञायकभाव/स्वद्रव्य में कर्म व रागादि है ही नहीं। एक ज्ञायकभाव स्वयं सदा पर के सम्बन्ध से रहित ही है।

ह्न प्रवचनरत्नाकर भाग-7, पृष्ठ : 141

देखना न भूलें

साधना चैनल पर प्रतिदिन रात्रि में 10.20 पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों को देखना/सुनना न भूलें।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : २५ २७७ अंक : १

प्रवचनसार पद्यानुवाद

आचरणप्रज्ञापनाधिकार

एक भी है दोष ना जो नारियों में नहीं हो।
अंग भी ना ढके हैं अतएव आवरणी कही।।२४।।•
चित्त चंचल शिथिल तन अर रक्त आवे अचानक।
और उनके सूक्ष्म मानव सदा ही उत्पन्न हों।।२५।।•
योनि नाभि काँख एवं स्तनों के मध्य में।
सूक्ष्म जिय उत्पन्न होते रहें उनके नित्य ही।।२६।।•
अरे दर्शन शुद्ध हो अर सूत्र अध्ययन भी करें।
घोर चारित्र आचरे पर ना नारियों के निर्जरा।।२७।।•
इसलिए उनके लिंग को बस सपट ही जिनवर कहा।
कुलरूप वययुत विज्ञ श्रमणी कही जाती आर्यिका।।२८।।•
त्रिवर्णी नीरोग तप के योग्य वय से युक्त हों।
सुमुख निन्दा रहित नर ही दीक्षा के योग्य हैं।।२९।।•
रतनत्रय का नाश ही है भंग जिनवर ने कहा।
भंगयुत हो श्रमण तो सल्लेखना के योग्य ना।।३०।।•
जन्मते शिशुसम नगन तन विनय अर गुरु के वचन।
आगम पठन हैं उपकरण जिनमार्ग का ऐसा कथन।।२२५।।

• आचार्य जयसेन की टीका में प्राप्त २४-३० गाथायें

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

विषयों की रुचि नहीं होती

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 37 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

यथा यथा समायाति संवितौ तत्त्वमुत्तमम्।
तथा तथा न रोचन्ते विषया: सुलभा अपि।।

जैसे-जैसे उत्तम तत्त्व अनुभव में आता है, वैसे-वैसे अतिसुलभ विषय भी रुचिकर नहीं लगते।

(गतांक से आगे...)

यह जीव अनादिकाल से मिथ्यात्व के वशीभूत होकर पुण्य-पाप, दया-दान, राग आदि का अनुभव करता आ रहा है; किन्तु जब इसे निज उत्तमतत्त्व आनन्दकन्द आत्मा का अनुभव होता है और जैसे-जैसे वह अनुभव बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे सांसारिक विषय-भोग रुचिकर नहीं लगते हैं।

परमात्मा द्वारा बताये गये निजशुद्धात्मा में एकाकार होनेवाला योगी है, बाकी सब भोगी है। बहुत से अज्ञानी जीव बाहर में योगी समान दिखाई देते हैं; किन्तु अन्तर से भोगी ही होते हैं और सम्यग्दृष्टि जीव बाहर से भोगी दिखता हुआ भी अन्तर में आत्मा से एकाकार होने से योगी ही है।

योगी जीव को अपने अतीन्द्रिय आनन्द के सामने संसार के समस्त भोगादिक की इच्छा रोग समान लगती है। अन्याय, छल-कपट या जबरदस्ती से प्राप्त स्त्री आदि के भोग तो उसके हैं ही नहीं; पर पूर्व पुण्य से प्राप्त स्त्री, पुत्रादि के भोगों को भी वह रोग समान ही मानता है। अतीन्द्रिय आनन्द के भोग के अतिरिक्त उसे अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता। जिसप्रकार रोगी रोग को नहीं चाहता, दवा आदि को भी नहीं चाहता; उसीप्रकार धर्मी जीव पाँच इन्द्रियों के विषय-भोगों के राग को रोग समान मानता है और उस रोग के इलाजरूप क्रिया-भोग को भी हेय ही जानता है।

जिसे दूधपाक का स्वाद अच्छा लगता है, उसे ज्वार की रोटी अच्छी नहीं

लगती; उसीप्रकार धर्मीजीव चक्रवर्ती हो तो भी अतीन्द्रिय आनन्द के सामने छह खण्डों का भोग भी उसे रुचिकर नहीं लगता।

प्रवचनसार में उदाहरण आता है कि जिसप्रकार मछली को जमीन पर आना ही दु:खरूप लगता है तो अग्नि में जाना कितना दु:खरूप प्रतीत होता होगा ? उसीप्रकार मैं आनन्दमूर्ति हूँ ह्न ऐसा भान और वेदन जिसे हुआ है, उसे शुभभावों में आना ही दु:खरूप प्रतीत होता है तो संसार के विषय-वासनारूप अंगारों में आना कैसा प्रतीत होता होगा ? अर्थात् निश्चित ही वह महाभयंकर दु:ख लगता होगा।

जिसे स्वभाव के अनुभव के समक्ष परभावों का अनुभव दु:खरूप लगता है, वह धर्मी है। इसके बिना स्त्री-पुत्रादि को छोड़कर मात्र जंगल में रहनेवाला धर्मी नहीं है।

सम्पूर्ण परपदार्थों से भिन्न, स्वतंत्र अस्तित्वस्वरूप अनंत गुणसम्पन्न आत्मा का अनुभव करनेवाले को अपना कार्य अपने अनंत गुणों के माध्यम से होता दिखाई देता है। वह ऐसा नहीं मानता कि अन्य पदार्थ मुझे कुछ कर सकते हैं; जबकि अज्ञानी जीव इसके विपरीत ऐसा मानता है कि परनिमित्त से मुझे रागादिक होते हैं और मेरे निमित्त से पर का कार्य होता है। उसे अपने आत्मा के स्वतंत्र स्वरूप और अनंत गुणों से होनेवाले कार्य की बात ख्याल में नहीं आती।

ज्ञानी जीव अन्तर अनुभव द्वारा आत्मा की प्रतीति करता है। उसे दृढ़ श्रद्धा है कि मैं अनंत ज्ञान, अनंत सुख, अनंत शांति का भण्डार हूँ और मेरे आनन्द आदि का कार्य मेरे स्वयं से होता है। उसे परद्रव्यों में सुखबुद्धि भी नहीं होती और परद्रव्य से अपना कार्य माननेरूप पराधीन बुद्धि भी नहीं वर्तती।

इसप्रकार धर्मी जीव को अपनी संपत्ति अर्थात् स्वानुभवरूप संवेदन में शुद्ध आत्मा का स्वरूप झलकता है, ज्ञान में आत्मा झलकता है, आत्म-स्थिरता में अनंत शांति की प्रतीति होती है। ऐसे शुद्धस्वभावरूप धर्म के धारक आत्मा की श्रद्धा, ज्ञान और स्थिरता का अनुभव करनेवाला ही वास्तविक रूप में धर्मात्मा है।

जबतक अपनी वस्तु का स्वरूप प्रतीति में नहीं आता, तबतक मुझे इन्द्रियों से ज्ञान होता है, परद्रव्य के कारण सुख और आनन्द की प्राप्ति होती है, पर के

कारण मेरा वीर्य स्फुरायमान होता है ह्न ऐसी पराश्रितबुद्धि ही रहती है; किन्तु जब यह पराधीन बुद्धि पलटती है, आत्मा का स्वरूप ख्याल में आता है, तब मैं पुण्य-पाप स्वरूप हूँ, मुझे पर का आधार है, मेरा विकास पर के आधीन है और परद्रव्य मेरे आधीन है ह्न ऐसी मिथ्याबुद्धि का नाश हो जाता है। जो आत्मा अबतक अशुद्धरूप भासित हो रहा था, वह अब शुद्धरूप भासित होने लगता है। इसप्रकार ज्ञाता-दृष्टापना आने से मेरा कार्य पर करता है और मैं पर का कार्य करता हूँ ह्न ऐसी पर के कर्तृत्व की बुद्धि भी नष्ट हो जाती है।

धर्मी के श्रद्धा-ज्ञान-अनुभव में जैसे-जैसे शुद्धात्मा का स्वरूप आता है, वैसे-वैसे बिना प्रयत्न के सहज प्राप्त रमणीक इन्द्रिय विषयों से ममत्वबुद्धि भी निकल जाती है। शुद्ध ज्ञायक जिसकी दृष्टि में आ गया, उसे परपदार्थ भोगने योग्य नहीं लगते। शरीर, स्त्री-कुटुम्ब, देवलोक, इन्द्राणी, मकान आदि में उसकी भोग्य बुद्धि नहीं वर्तती; क्योंकि उसे एकमात्र अपना आत्मा ही भोग्य लगता है।

परपदार्थ तो धर्मी को भोग्य लगते ही नहीं; अपितु पुण्य-पाप, पुण्य का फल और वर्तमान शुभभाव भी उसे भोग्य नहीं लगते। उसे तो केवल ज्ञान, दर्शन, स्वच्छता, प्रभुता आदि गुण ही भोग्य लगते हैं; अत: बाहर के रमणीक विषयों में उसे भोगबुद्धि नहीं रहती है।

जिसे अपने अनंतगुणस्वरूप आत्मा में भोग्यबुद्धि हो गई है, उसे बाह्य द्रव्यों में भोग्यबुद्धि कैसे होगी ? जिसप्रकार एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती; उसीप्रकार आत्मा में भी भोग्यबुद्धि और परपदार्थों में भी भोग्यबुद्धि ह्न ऐसी दो चीजें एकसाथ नहीं रह सकती।

सम्यग्दृष्टि चक्रवर्ती पद में रहे अथवा इन्द्रपद में रहे, किन्तु वस्तुत: वह सम्यग्दृष्टि का पद नहीं है। सम्यग्दृष्टि तो निजपद में ही निवास करता है। वह कहता है कि राग में मेरा पद नहीं है। चक्रवर्ती के सिंहासन या 96 हजार रानियों के भोग में भी मेरा पद नहीं है। मेरा पद तो मेरे समीप है, अन्तर में है, आत्मा में है। ऐसा अनुभव करनेवाले ज्ञानी को अनुकूलतायें ललचा नहीं सकती और प्रतिकूलतायें दु:खी नहीं कर सकती। **(क्रमश:)**

विभाव पर्याय और स्वभाव पर्याय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 15 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथायें मूलत: इसप्रकार है ह्न

णरणारयतिरियसुरा पज्जाया ते विहावमिदि भणिदा।
कम्मोपाधिविवज्जियपज्जाया ते सहावमिदि भणिदा ।।15।।

मनुष्य, नारक, तिर्यंच और देवरूप पर्याय विभावपर्याय कही गई है और कर्मोपाधिरहित पर्याय स्वभावपर्याय कही गई है।

(गतांक से आगे...)

सहजज्ञानादि स्वभाव अनंतचतुष्टययुक्त कारणशुद्धपर्याय में से केवलज्ञानादि अनंतचतुष्टययुक्त कार्यशुद्धपर्याय प्रकट होती है। पूजनीय परमपारिणामिकभाव परिणति कारणशुद्धपर्याय है और शुद्ध क्षायिकभाव परिणति कार्यशुद्धपर्याय है।

इस कारणशुद्धपर्याय में उत्पाद-व्यय नहीं है, यह वर्तमानरूप है; किन्तु इसका अनुभव नहीं होता। यदि इसका अनुभव हो तो संसार-मोक्ष आदि किसी पर्याय का व्यवहार नहीं हो सकेगा। यदि यह एकधारारूप कारणशुद्धपर्याय आत्मा के साथ त्रिकाल न हो तो स्वभाव की त्रिकालशक्ति और उसका एकरूप पूरा वर्तमान ह्न इन दोनों के अभेदरूप परमपारिणामिकभाव सिद्ध नहीं होता।

इस कारणशुद्धपर्याय के आश्रय से प्रकट होनेवाला मोक्ष कार्य है, जबकि यह पर्याय त्रिकाल कारणरूप वर्त रही है। यह परमपारिणामिकभाव की पर्याय पूजित है, आश्रय करने योग्य है।

अहो ! यहाँ मुनिराज ने वस्तुस्वभाव के गूढ़ रहस्य को उद्घाटित किया है। ऐसी स्पष्ट बात आज कहीं सुनने को नहीं मिलती।

वस्तु के साथ कारणशुद्धपर्याय अनादि-अनंत एकरूप धाराप्रवाह वर्तती है। वह गुण अथवा सामान्य द्रव्य नहीं है; अपितु सामान्य के साथ वर्तता हुआ एक ध्रुव

विशेष है। उसका व्यक्त अनुभव किसी को नहीं होता। यदि उसका व्यक्त अनुभव हो जाये तो वह कारण नहीं रहता। उसमें उत्पाद-व्यय नहीं होने पर भी वह परिणति है, पर्याय है। वह द्रव्य के साथ अखण्ड पारिणामिकभाव से वर्तमान वर्तती है।

अहो ! एकधारारूप परमपारिणामिकभाव की परिणति से शोभित चैतन्य भगवान विराज रहा है। वह द्रव्य और गुण से तो परिपूर्ण है ही; परन्तु पर्याय में भी जब देखो तभी परिपूर्ण भगवान अनादि-अनंत एकधारारूप वर्तमानपने विराज रहा है।

यह कारणशुद्धपर्याय एकरूप सत् है। उत्पाद-व्यय भी सत् तो है; परन्तु यह तो त्रिकाल एकरूप भाव से सत् है। इसमें अभावपना कभी नहीं आता। समय-समय उत्पाद-व्यय होता है, वह सत् है; किन्तु उसमें उत्पाद और व्यय की विविधता है; जबकि इस कारणशुद्धपर्याय में विविधता नहीं है। जिसप्रकार उत्पाद-व्यय सत् है, उसकी वाचक वाणी भी सत् है और उसका ज्ञान भी सत् है; उसीप्रकार यह कारणशुद्धपर्याय सहज शुद्धनिश्चय से सभी जीवों में सत् है। उसको कहनेवाली यह वाणी भी सत् है और ज्ञान भी सत् है।

स्वभाव चतुष्टय में जो '**सहज परम वीतराग सुख**' कहा उसमें '**वीतराग**' शब्द से ऐसा मत समझना कि '**पहले राग था और बाद में टल गया**'; परन्तु तीनों काल वह तो रागरहित ही है। अहो ! चैतन्य भगवान अपने स्वभाव अनंतचतुष्टय की सहज परिणति के साथ ही त्रिकाल विद्यमान है। एकसमय भी उस परिणति का उसे विरह नहीं है। इसतरह वह अपनी स्वरूप परिणतिसहित पूजनीय है।

जैसा त्रिकालस्वभाव वैसा ही उसका वर्तमान, जैसा त्रिकाल सामान्य वैसा ही उसका वर्तमान विशेष ह्न इसप्रकार अभेद परमपारिणामिकस्वभाव त्रिकाल वर्त रहा है। यह मात्र स्वभाव की ही अपेक्षावाली धारावाही पर्याय है, जैसा ध्रुव सामान्यशक्तिरूप स्वभाव है, वैसी ही उसकी सहज परिणति उसके साथ विराज रही है, वह महापूजित है। त्रिलोकीनाथ अरहन्त-सिद्ध भगवान की अपेक्षा भी यह परम पारिणामिकभाव की परिणति महापूजित है; क्योंकि यही केवलज्ञान और मोक्ष का कारण है।

चैतन्य की वर्तमान कारणशुद्धपर्याय आदरणीय है, उसमें एकाग्रता करना योग्य है; क्योंकि उसी से मोक्षमार्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है; अत: मोक्षमार्ग और मोक्ष

की पर्याय की अपेक्षा भी यह परमपारिणामिकभावरूप कारणशुद्धपर्याय पूज्य है।

जिसप्रकार समुद्र, समुद्र के पानी का दल और उसकी एकरूप पानी की सपाटी ह्न ये तीनों त्रिकाल एकरूप हैं, उसमें लहरें उछलती हैं; उसीप्रकार आत्मा में त्रिकाल एकरूप द्रव्य, उसके गुण और उसकी एकरूप ध्रुव पारिणामिकभाव से वर्तती पर्याय है। उसमें उदय, उपशम, क्षयोपशम और क्षायिकभाव तो उत्पाद-व्यय वाली पर्याय है; जबकि यह कारणशुद्धपर्याय एकरूप धारावाही वर्त रही है।

देखो ! यह वेदान्त जैसा नही है। जिसप्रकार सामान्य कूटस्थ है, उसीप्रकार उसकी ध्रुव परिणति भी कूटस्थ है; परन्तु उसको कौन जानता है ? जाननेवाली तो उत्पाद-व्ययस्वरूप मोक्षमार्ग की पर्याय है। यह कारणशुद्धपर्याय पर्यायदृष्टि का विषय नहीं है। यह तो शुद्ध द्रव्यदृष्टि/शुद्धनिश्चयनय का विषय है। सामान्य और विशेष से परिपूर्ण स्वभाव न हो तो चैतन्य की पूर्णता सिद्ध नही होती। दृष्टि का विषय पूर्ण नहीं होता और चैतन्य की महिमा भी नहीं होती।

धर्मास्तिकाय आदि चार द्रव्य तो अमूर्त/जड़ हैं; तथापि उनमें भी त्रिकाल एकरूप भाव से पर्याय वर्तती है। उनको जाननेवाला जो सर्वोत्तम महिमावान भगवान आत्मा है, उसमें भी त्रिकाल एकरूप धारावाही कारणशुद्धपरिणति वर्त रही है। हीनाधिकपनारूप विषमता उसमें नहीं है; अत: उसमें एकाग्रता करने से मोक्षमार्ग तथा मोक्ष प्रकट होता है।

धर्मास्तिकाय आदि चार द्रव्यों में तो मात्र प्रमेयत्व ही है। वे स्वयं अपने को नहीं जानते है, उनको प्रकट करनेवाला तो आत्मा का ज्ञान है ह्न अर्थात् आत्मा ही महिमावान है, उस आत्मा में त्रिकाल एकरूप स्वभावचतुष्टय के साथ जो सहज पंचमभावरूप परिणति वर्त रही है, उसका नाम कारणशुद्धपर्याय है। **परिणामे भव: पारिणामिक:** द्रव्य में एकरूप परिणामपने वर्तनेवाली पारिणामिकभाव की परिणति है। वह परिणति व्यवहारनय का विषय नहीं है, वह शुद्ध निश्चयनय का विषय है, त्रिकाल है, कारणरूप है, गुण नहीं; पर्याय है। प्रकट वेदनरूप नहीं, किन्तु शक्तिरूप है। कार्यस्वभाव पर्याय का वर्णन आगे आयेगा। यह तो चैतन्य भगवान के साथ विराजित उसकी परिणति की बात है। **(क्रमश:)**

छहढाला प्रवचन

श्रीगुरु का जीवों को सुखकर उपदेश

जे त्रिभुवन में जीव अनन्त, सुख चाहैं दु:खतें भयवन्त।
तातैं दु:खहारी सुखकार, कहें सीख गुरु करुणाधार।।१।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे ....)

देह से भिन्न आत्मा को जाननेवाले व राग से भिन्न आनन्द का अनुभव करनेवाले वीतरागी मुनि, जो रत्नत्रय के धारक हैं व मोक्ष के साधक हैं, तीन कषायचतुष्क का जिनके अभाव है, प्रचुर वीतरागी स्वसंवेदन जिनको वर्त रहा है ह्न ऐसे गुरु करुणा करके 84 लक्ष योनि के दु:खी जीवों के लिए हित की शिक्षा/उपदेश देते हैं। कैसा उपदेश देते हैं ? ह्न दु:ख का नाश करनेवाला और सुख की प्राप्ति करानेवाला। **(तातैं दु:खहारी सुखकार, कहैं सीख गुरु करुणाधार)**।

देखो ! इसमें दु:ख का अर्थात् विकार का व्यय और आनन्द की उत्पत्ति ह्न ऐसे उत्पाद-व्यय आ गये और दु:ख से छूटकर वही आत्मा सुखपर्याय में नित्य रहता है ह्न ऐसी ध्रुवता भी आ गई। उत्पाद-व्यय-ध्रुवरूप सत्वस्तु के बिना दु:ख से छूटना व सुखी होना बन ही नहीं सकता।

अहो ! वीतरागमार्ग अलौकिक है। साधक सन्तों का स्व-संवेदनरूप वीतराग-विज्ञान अपूर्ण होने पर भी वह केवलज्ञान की जाति का है, अधूरा होने पर भी राग से रहित है। ऐसे वीतरागी सन्तों ने जगत को वीतराग-विज्ञान की ही सीख दी है। केवलज्ञान के साधनेवाले सन्तों ने जो वीतराग-विज्ञानरूप मोक्षमार्ग का उपदेश दिया है, वही इस छहढाला में संक्षेप से कहा है।

अतएव यह शास्त्र छोटा होने पर भी प्रमाणभूत है। इसमें अतिसुगम शैली से ऐसा तत्त्व समझाया है कि घर-घर में बच्चों को भी यह पढ़ाने योग्य है।

इस शास्त्र में एवं सभी वीतरागी शास्त्रों में आत्मा को सुख देनेवाला व दु:ख से

छुड़ानेवाला उपदेश दिया है। जिसके द्वारा विकार का, दुःख का नाश हो व सुख की प्राप्ति हो, यही सन्तों का उपदेश/सीख है। यह विकार दुःख है, इसके नाश अर्थात् निर्विकारीदशा प्रगट करने का उपदेश है, राग को छोड़ने व वीतरागभाव को प्रगट करने का उपदेश है ह्न ऐसा उपदेश ही इष्टोपदेश है। इष्ट-उपदेश अर्थात् हित का उपदेश, प्रिय उपदेश। इस उपदेश की समझ का फल यह है कि भेदविज्ञान होकर दुःख का नाश हो और सुख का अनुभव प्रगट हो; ह्न यही तो जीव को इष्ट है, यही प्रयोजन है और यही सार है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रथम मंगलाचरण में जिस वीतराग-विज्ञान को नमस्कार किया, यही वीतराग-विज्ञान प्रगट करने का उपदेश जैनधर्म के चारों अनुयोगों में दिया है, चारों ही अनुयोग वीतराग-विज्ञान के पोषक हैं और उसी का उपदेश इस पुस्तक में भी करेंगे; अत: हे भव्यजीवों ! तुम इसे अपने हित के लिये प्रीतिपूर्वक सुनो।

संसार में भ्रमण करते-करते अनंत काल में दुर्लभ ऐसा संज्ञीपन जिसे प्राप्त हुआ है और उसमें भी आत्महित का उपदेश सुनकर समझ सकें ह्न इतनी विचारशक्ति प्रगट हुई है, इसप्रकार की ज्ञान की ताकत व समझने की जिज्ञासा है ह्न ऐसे जीव के लिए श्रीगुरु करुणापूर्वक यह उपदेश सुनाते हैं।

अहा ! सन्तों ने मोक्ष का मार्ग समझाकर जगत के ऊपर उपकार किया है।

दुःख का नाश, सुख की प्राप्ति ह्न बस ! इसमें मोक्षमार्ग आ गया। दुःख का कारण मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र ह्न इनका तो जिनवाणी नाश कराती है और सुख के कारण सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्रगट कराती है। जिस भाव से दुःख का नाश न हो व सुख का अनुभव न हो, उस भाव को भगवान धर्म नहीं कहते, उसको मोक्षमार्ग नहीं कहते; और जिसमें ऐसे भाव के सेवन करने को कहा हो, वह उपदेश सच्चा नहीं, हितकर नहीं। सन्तों ने तो जिससे जीव का भला हो, हित हो ह्न ऐसे वीतराग-विज्ञान की ही शिक्षा दी है, उसे ही धर्म कहा है।

तीनलोक में किसी जीव को दुःख प्रिय नहीं लगता; दुःख से सभी डरते हैं। क्या निगोद के जीव भी दुःख से डरते हैं? ह्न हाँ, अव्यक्तरूप से वे भी दुःख से छूटना ही चाहते हैं। प्रत्येक जीव का ऐसा ही स्वभाव है कि सुख ही उसका स्वरूप है और दुःख उसका स्वरूप नहीं है। क्वचित् अपमानादि के दुःख होने पर देह का

त्याग करके भी उस दुःख से छूटकर सुखी होना चाहता है तथा शरीररहित अकेला रहकर भी दुःख से छूटना चाहता है; अतः शरीररहित अकेला आत्मा सुखी रह सकता है; इससे सिद्ध होता है कि आत्मा स्वयं सुखस्वरूप है। 'अरे, ऐसे दुःख से तो मर जाना अच्छा' ह्न इसप्रकार मरण से भी दुःख असह्य लगते हैं, दुःख से छूटने के लिए जीव मृत्यु को भी कुछ नहीं गिनता; इसप्रकार जीव को दुःख प्रिय न होने से देह को छोड़कर भी दुःख से छूटना चाहते हैं। इसतरह अव्यक्तरूप से भी यह सिद्ध होता है कि आत्मा में देह के बिना सुख है। यदि देहातीत अपने आत्मा को अन्तर में देखे तो अवश्य अतीन्द्रिय सुख का अनुभव हो; परन्तु अज्ञानी अपने आत्मा का सच्चा भान नहीं करता; अतः उसे अपना सुख अनुभव में नहीं आता।

अपमानादि के होने पर भीतर में तीव्र दुःख लगे, समाधान कर न सके, परीक्षा में अनुत्तीर्ण होवे, धन्धे में बड़ा नुकसान होवे या देह की तीव्र पीड़ा सहन न होवे ह्न ऐसे प्रसंग में कोई जीव विचार करता है कि अरे रे ! अब तो जहर खाकर या पानी में डूबकर इस दुःख से छूटूँ ! देखो तो सही, जहर खाना तो सुगम लगता है; किन्तु दुःख सहन करना कठिन लगता है। भाई ! देह छोड़कर भी सचमुच में यदि तू सुखी होना चाहता है और दुःख से तुझे छूटना है तो उसका सच्चा रास्ता ले। देह से भिन्न ज्ञानस्वरूप आत्मा क्या चीज है, इसकी पहचान करके वीतराग-विज्ञान प्रगट करना ही सच्चा उपाय है। यहाँ वह उपाय सन्त तुझे दिखाते हैं, उसे तू सावधान होकर सुन।

आत्मभ्रांति के समान दूसरा कोई रोग नहीं और आत्मज्ञ गुरु के समान दूसरा कोई वैद्य नहीं। अरे भाई ! देह के रोग की पीड़ा से तू छूटना चाहता है; किन्तु आत्मभ्रांति के रोग का जो महान दुःख है, इससे छूटने का उपाय कर। इसके लिए वीतराग-विज्ञान के उपदेशक सद्गुरु को सच्चा वैद्य समझ ह्न ऐसे गुरु ने दुःख से छूटने व सुख प्रगट करने का जो उपदेश दिया है, उसे सुनने की आगामी छन्द में प्रेरणा देते हैं। ✻

हमारे यहाँ उपलब्ध नवीन प्रकाशन

1. समयसार (डॉ. भारिल्ल कृत ज्ञायकभाव प्रबोधिनी टीका) : 50/-, 2. पश्चाताप खण्डकाव्य - डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल : 6/- रुपये, 3. ये तो सोचा ही नहीं - पण्डित रतचन्द भारिल्ल : 15/- रुपये, 4. जिन खोजा तिन पाइयां - पण्डित रतनचन्द भारिल्ल : 10/- रुपये, 5. गुणस्थान विवेचन (गुजराती) - ब्र. यशपाल जैन : 25/- रुपये।

प्राप्ति स्थल - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : सभी गुणों का कार्य व्यवस्थित ही है तो फिर पुरुषार्थ क्या करना ?

उत्तर : जिसको क्रमबद्धपर्याय की श्रद्धा में पुरुषार्थ भासित ही नहीं होता, उसको व्यवस्थितपना बैठा ही कहाँ है ?

प्रश्न : उसको व्यवस्थितपने का श्रद्धान नहीं हुआ तो उसका वैसा परिणमन भी तो व्यवस्थित ही है। वह व्यवस्थितपने का निर्णय नहीं कर सका ह्न यह बात भी तो व्यवस्थित ही है। ऐसी दशा में निर्णय करने की कथा कहना व्यर्थ ही है।

उत्तर : उसका परिणमन व्यवस्थित ही है ह्न ऐसी उसे खबर कहाँ है ? परिणमन व्यवस्थित है ह्न यह तो सर्वज्ञ ने कहा है; परन्तु उसे सर्वज्ञ का भी निर्णय कहाँ है ? प्रथम वह सर्वज्ञ का निर्णय करे, पश्चात् उसे व्यवस्थितपने की खबर हो।

प्रश्न : वस्तु व्यवस्थित परिणमनशील है, इसप्रकार भगवान के कथन की श्रद्धा तो उसे है ?

उत्तर : नहीं ! सर्वज्ञ भगवान का सच्चा निर्णय भी उसको नहीं है; क्योंकि सर्वज्ञ का निर्णय हुये बिना व्यवस्थितपने का निर्णय कहाँ से हो ? मात्र ज्ञानी की बातें सुन-सुनकर वैसा का वैसा ही कहे तो इससे काम नहीं चलेगा। प्रथम सर्वज्ञ का निर्णय तो करो। द्रव्य का निर्णय किये बिना सर्वज्ञ का निर्णय वास्तव में हो ही नहीं सकता।

प्रश्न : क्रमबद्ध मानने पर करने के लिये क्या है ?

उत्तर : करना है कहाँ ? करने में तो कर्तृत्वबुद्धि आती है। करने की बुद्धि छूट जाये सो क्रमबद्ध है। यह जीव पर में तो कुछ कर नहीं सकता और अपने में भी जो होनेवाला है, वही होता है अर्थात् अपने में राग होना है तो होगा, उसमें करना क्या ? राग में से कर्तृत्वबुद्धि छूट गई, भेद और पर्याय से भी दृष्टि हट गई; तब क्रमबद्ध की प्रतीति हुई। क्रमबद्ध की प्रतीति में ज्ञातादृष्टापना है। जहाँ निर्मल पर्याय को करने की बुद्धि भी मिट गई है, वहाँ राग को करूँ ह्न यह बात कैसे होगी ?

अरे ! ज्ञान करूँ ह्न ऐसी बुद्धि भी छूट जाती है और अकेला ज्ञान रह जाता है।

जिसे राग करना है, राग में अटकना है, उसे क्रमबद्ध की बात नहीं जमती। राग को करना और छोड़ना ह्न दोनों आत्मा में नहीं है। आत्मा तो अकेला ज्ञानस्वरूप है।

पर की पर्याय तो जो होनी है, वही होती है, उसे मैं करूँ भी क्या और मेरे में जो राग आता है, उसे मैं क्या लाऊँ ? मुझमें जो शुद्धपर्याय आये उसको करूँ या लाऊँ ह्न ऐसे विकल्प से भी मुझे क्या ? अपनी पर्याय में होनेवाला राग और होनेवाली शुद्धपर्याय को करने का विकल्प ही क्या ? राग और शुद्धपर्याय के कर्तृत्व का विकल्प शुद्धस्वभाव में नहीं है। अकर्तापना आ जाना ही मोक्षमार्ग का पुरुषार्थ है।

प्रश्न : मोक्ष की पर्याय यत्नपूर्वक करे तब होगी या होनी होगी तब होगी ?

उत्तर : ज्ञानी की दृष्टि द्रव्य के ऊपर पड़ी है। द्रव्य में भाव नाम का गुण है, इसी गुण के कारण निर्मल पर्याय होती है, उसको करे तब हो - ऐसा नहीं है। दृष्टि द्रव्य के ऊपर पड़ने से ही निर्मलता होती है।

प्रश्न : क्या श्रुतज्ञानी को केवलज्ञान प्रकट करने की उतावली नहीं होती है ?

उत्तर : श्रुतज्ञानी को केवलज्ञान होने ही वाला है; अत: उतावली अधैर्यपना नहीं होता। वह जानता है कि क्रमबद्धपर्याय के अनुसार केवलज्ञान प्रकट होने के काल में ही प्रकट होगा। क्रमबद्ध में अकर्त्तापन होने से वीतरागता है। जैसे द्वितीया का उदय हुआ है तो वह पूर्णचन्द्र बनकर ही रहेगा। इसमें किसीप्रकार का संशय नहीं है, वैसे ही जिसे अन्तरात्मा का भान हुआ है, उसे केवलज्ञान प्रकट होना ही है। केवलज्ञान तो दौड़ा आ रहा है, वह तो अल्पकाल में ही प्रकट होगा। इसमें संशय या संदेह की श्रुतज्ञानी को आवश्यकता ही नहीं है।

ब्र. यशपालजी जैन द्वारा धर्मप्रभावना

1. दमोह (म.प्र.) : यहाँ काँच मन्दिर में दिनांक 8 से 12 जून, 06 तक ब्र. यशपालजी जैन के वस्तुव्यवस्था विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही तारण-तरण चैत्यालय में गुणस्थान की कक्षा तथा सेठजी मन्दिर में रत्नत्रय की पूर्णता विषयपर प्रवचन हुआ। इसी मंदिर में श्रोताओं की करणानुयोग सम्बन्धी शंकाओं का हृदयग्राही विवेचन किया गया।

2. बीना (म.प्र.) : यहाँ बड़ी बजरिया में दिनांक 12 से 15 जून, 2006 तक रत्नत्रय की पूर्णता एवं ज्ञानी जीव की परिणति विषयपर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में शंका-समाधान हेतु तत्त्वचर्चा का आयोजन किया गया। अनेक उत्साही विद्यार्थियों तथा श्रोताओं ने आपकी प्रेरणा से अनेक ग्रन्थों को कण्ठस्थ करके सुनाये। ●

नागपुर एवं कोल्हापुर के विविध क्षेत्रों में ग्रुप शिविर

1. नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट एवं अखिल भा. जैन युवा फैडरेशन नागपुर के तत्त्वावधान में श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं श्रीमती रतनबाई मगनलालजी जैन (सांवला) की स्मृति में श्री हुकमचन्दजी, शांतिकुमारजी जैन के सहयोग से विदर्भ के 27 स्थानों पर दि.3 से 11 जून, 06 तक संस्कार शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

शिविर में **नागपुर (नेहरु पुतला) में** पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अमोलजी संघई हिंगोली, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित जितेन्द्रजी राठी जयपुर, पण्डित अभिषेकजी अलीगढ़ एवं श्रीमती सुनीताजी जैन नागपुर; **यवतमाल** में पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर एवं श्रीमती ज्योतिजीमांगुलकर काटोल; **वर्धा** में पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ़; **रामटेक** में पण्डित विजयजी आह्वाने देवलगाँवराजा; **मूर्तिजापुर** में पण्डित वीरेन्द्रजी वीर फिरोजाबाद, पण्डित संतोषजी जैन अम्बड़ एवं पण्डित किशोरजी धोंगडे रहाटगाँव; **चन्द्रपुर** में पण्डित समकितजी शास्त्री सिलवानी; **शेन्दुरजनाघाट** में पण्डित रविन्द्रजी काले कारंजा; **नेरपिंगलई** में पण्डित सुरेशजी काले राजुरा; **दारव्हा** में पण्डित सत्येन्द्रजी मिरकुटे पानकन्हेरगाँव; **आर्वी** में पण्डित अतुलजी ललितपुर; **पुलगांव** में पण्डित राहुलजी अलवर; **नागपुर (तारण-तरण)** में पण्डित स्वतंत्रजी खरगापुर; **बुटीबोरी** में पण्डित सतीशजी बोरालकर डोणगाँव; **कलमेश्वर** में पण्डित प्रजयजी कान्हेड हिंगोली; **नाचनगाँव** में पण्डित मुकुन्दजी ढोके वसमतनगर; **वरुड** में पण्डित अरहंतवीरजी जैन फिरोजाबाद; **हिंगनघाट** में पण्डित अभिषेकजी जैन बांरा; **परतवाड़ा** में पण्डित सचिनजी गढी; **अचलपुर** में पण्डित विनयजी बूँदी; **भण्डारा** में पण्डित रविन्द्रजी महाजन परभणी; **जरुड** में पण्डित पंकजजी दहातोंडे परली; **देवली** में पण्डित अनुरागजी भगवाँ; **नागपुर (लक्ष्मीनगर)** में पण्डित ज्ञायकजी देवलाली; **कोंढाली** में पण्डित अनुभवजी मौ; **सिंदेवाही** में पण्डित नीरजजी सिंगोली; **बडनेरा** में पण्डित संयमजी अलीगढ; **हीवरखेड** में पण्डित संदीपजी जैन रावतभाटा आदि 39 विद्वानों द्वारा धर्मलाभ मिला।

शिविर का सामूहिक उद्घाटन समारोह 3 जून को शिखरचन्दजी मोदी नागपुर तथा सामूहिक समापन समारोह 11 जून को श्री भरतभाई वाटविया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समारोह में पण्डित राकेशजी शास्त्री मंगलायतन एवं पण्डित नागेशजी पिडावा का उद्बोधन प्राप्त हुआ।

पुरस्कार वितरण-कर्त्ता श्री नरेशकुमारजी सिंघई नागपुर थे। सभा का संचालन पण्डित प्रवेशजी भारिल्ल करेली ने किया। शिविर में कुल 12 हजार साधर्मियों तथा 2700 बालकों ने धर्मलाभ लिया।

सम्पूर्ण शिविर का संयोजन पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, पण्डित प्रवेशजी भारिल्ल तथा सह-संयोजन पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी राठी एवं पण्डित देवेन्द्रजी बण्ड ने किया। स्थानीय कार्यकर्ताओं का भी सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। आभार प्रदर्शन श्री अशोकजी जैन ने किया।

2. कोल्हापुर (महा.) : यहाँ सर्वोदय स्वाध्याय समिति कोल्हापुर के तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 6 जून, 2006 तक कोल्हापुर विभाग के 19 स्थानों पर ग्रुप शिविर लगाया गया।

शिविर में पण्डित अभिनन्दनजी पाटील, पण्डित जितेन्द्रजी चौगुले, पण्डित अनिलजी आलमान, पण्डित दीपकजी अथणे, पण्डित रोहनजी रोटे, पण्डित रमेशजी शिरहट्टी, पण्डित प्रसन्नजी शेटे, पण्डित अभिजीतजी अलगोंडर, पण्डित मिलिन्दजी केटकाले, पण्डित उमेशजी घोसरवाडे, पण्डित रविन्द्रजी आलमान, पण्डित संदीपजी पाटील, पण्डित दीपकजी मजलेकर, पण्डित भरतजी कोरी, पण्डित संयमजी शेटे, पण्डित दीपकजी चौगुले, पण्डित अमोलजी निर्वाणे, पण्डित सनतजी खोत, पण्डित श्रेणिकजी कोरेगावे, पण्डित सुकुमारजी पाटील आदि विद्वानों के सहयोग से नरंदे, वलीवडे, वसगडे, कबनूर, गणेशवाडी, अकीवाट, घोसरवाड, शिरोली, जैनापुर, नेज, चिंचवाड, शिरदवाड, भेंडवडे, कोल्हापुर, साडवली, आलते, मानकापुर और खिद्रापुर में धर्मप्रभावना की गई। सभी स्थानों पर प्रतिदिन तीनों समय प्रवचन, एवं कक्षायें संचालित हुई।

7 जून को सर्वोदय सरोज स्मारक कोल्हापुर में आयोजित समापन समारोह में श्री अशोकजी पाटील, श्री रमेशजी आदण्णावर, श्री अशोकजी मोहिरे आदि अतिथि उपस्थित थे।

शिविर में 1230 बालक एवं 840 प्रौढों ने धर्मलाभ लिया। यह शिविर पण्डित जिनचन्दजी आलमान की प्रेरणा से पण्डित भरतजी शास्त्री बाहूबली एवं पण्डित अभिजीतजी पाटील वसगडे के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ।

3. भिण्ड (म.प्र.) : अखिल भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा-देवनगर, भिण्ड एवं श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में भिण्ड, ग्वालियर, इटावा एवं शिवपुरी के निकटवर्ती 29 स्थानों पर दि. 13 से 22 जून, 2006 तक 29 वाँ सामूहिक बाल संस्कार शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

शिविर में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित नागेशजी पिड़ावा, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना के अतिरिक्त श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर, श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन मंगलायतन, आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान ध्रुवधाम बांसवाड़ा एवं श्री नन्दीश्वर महाविद्यालय खनियांधाना से पधारे विद्वानों के माध्यम से प्रतिदिन प्रात: पूजन-प्रक्षाल, शिक्षण कक्षायें, प्रवचन, दोपहर में प्रौढ कक्षायें, सायंकाल बाल कक्षा व भक्ति तथा रात्रि में प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा धर्मप्रभावना हुई।

शिविर का संयोजन पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री एवं पण्डित विकासजी शास्त्री मौ ने किया।

वैराग्य समाचार

1. इन्दौर निवासी श्री मांगीलालजी छाबड़ा का दि.5 जून, 06 को शांतपरिणामों से देहावसान हो गया है। आप सोनगढ़ तथा जयपुर के शिविरों में आकर तत्त्वज्ञान का लाभ लिया करते थे।

ज्ञातव्य है कि आप **पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा** के बड़े भाई थे। आपकी स्मृति में आपके सुपुत्र श्री कैलाशचन्दजी छाबड़ा की ओर से 502/-रुपये प्राप्त हुये।

2. भोपाल निवासी पण्डित गुलाबचन्दजी जैन का दिनांक 13 जून,06 को शांत परिणामों से देहावसान हो गया। आप जैन दर्शन के अच्छे विद्वान थे; पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से दसलक्षण एवं अष्टान्हिका महापर्व पर प्रवचनार्थ जाया करते थे।

दिवगंत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

शिक्षण-शिविर सम्पन्न

1. **छिन्दवाड़ा (म.प्र.) :** यहाँ श्रुतपंचमी पर्व के पावन अवसर पर श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 1 जून से 10 जून तक दस दिवसीय शिक्षण-शिविर का आयोजन बाल ब्र. केशरीचन्दजी 'धवल' के निर्देशन में किया गया।

इस अवसर पर बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के मार्मिक प्रवचनों का लाभ स्थानीय एवं बाहर से पधारे हुये साधर्मियों को प्राप्त हुआ। पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री द्वारा बालकों के लिये विशेष कक्षा का आयोजन किया गया।

2. **उदयपुर (राज.) :** यहाँ श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति उदयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 11 से 18 जून, 2006 तक षष्ठम बाल संस्कार शिक्षण शिविर एवं सिद्धपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि, पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर तथा स्थानीय विद्वानों में पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री, पण्डित हेमन्तजी शास्त्री, पण्डित संजयजी शाह, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अश्विनजी नानावटी, पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री, पण्डित निपुणजी शास्त्री, डॉ. ममताजी जैन द्वारा प्रतिदिन दोनों समय प्रवचन एवं विभिन्न कक्षायें ली गई। ध्रुवधाम-बांसवाड़ा में अध्ययनरत छात्रों ने भी कक्षायें ली।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा के निर्देशन में सम्पन्न कराये गये तथा सम्पूर्ण शिविर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

कल्पद्रुम मण्डल विधान सम्पन्न

बड़नगर-उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन महिला मण्डल तेरापंथी गोठ के तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभ बड़ा मंदिर में दिनांक 25 जून से 1 जुलाई 2006 तक श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाडा, पण्डित अनिलजी पाटोदी बडनगर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान के कार्य ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, पण्डित क्रान्तिकुमारजी पाटनी इन्दौर एवं विदुषी ज्ञानधाराजी झांझरी उज्जैन ने कराये।

दिनांक 25 जून को शांतिजाप, मंगलकलश स्थापना, झण्डारोहण पूर्वक विधान का उद्घाटन किया गया तथा 1 जुलाई को शांतियज्ञ पूर्वक समापन के पश्चात् जिनेन्द्र रथयात्रा निकाली गई।

कार्यक्रम में टोडरमल संगीत सरिता जयपुर एवं तरंग महिला मण्डल उज्जैन द्वारा आध्यात्मिक भक्ति गीतों का रसास्वादन कराया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पिडावा पार्टी द्वारा कवि सम्मेलन विशेष रहा। इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर को साहित्य की कीमत कम करने हेतु 50,000/- रुपये प्राप्त हुये। **- अशोक शाह**

अष्टाह्निका महापर्व धूम धाम से मनाया

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर दिनांक 4जुलाई से 11 जुलाई, 06 तक श्री सुरेशकुमारजी अजितकुमारजी तोतूका परिवार द्वारा सिद्धचक्र महा मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के मार्मिक प्रवचन हुये तथा रात्रि में पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री के विधान की जयमाला पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. यशपालजी द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा परमभाव प्रकाशक नयचक्र एवं तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक एवं तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1, पण्डित श्रुतेशजी सातपुते द्वारा वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1एवं पण्डित जितेन्द्रकुमारजी राठी द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार की कक्षायें ली गई।

विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में महाविद्यालय के विद्यार्थियों के सहयोग से पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा ने सम्पन्न कराये।

साथ ही **घी वालों का रास्ता स्थित श्री दि. जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर** में प्रतिदिन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के दोनों समय मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं सर्वार्थसिद्धि पर प्रवचनों के अतिरिक्त प्रात: श्री विजयकुमारजी सौगाणी के निर्देशन में पंचमेरु-नन्दीश्वर विधान का आयोजन हुआ।

जिनमंदिर का शिलान्यास

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ स्वाध्यायप्रेमी सेवानिवृत्त इन्जीनियर श्री सुरेशचन्दजी जैन ने सम्पूर्ण कॉलोनी को आध्यात्मिक वातावरण प्रदान करने के लिये दिनांक 6 जुलाई, 2006 को एक जिनमंदिर के निर्माण का शिलान्यास अध्यात्म रत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर के करकमलों से कराया। समारोह में ध्वजारोहण श्री वीरचन्दजी सर्राफ भिण्ड ने किया।

शिलान्यास विधि पण्डित लालजी-रामजी विदिशा ने सम्पन्न कराई। इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं डॉ. कपूरचन्दजी कौशल भोपाल भी उपस्थित थे।

अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर दि. जैन छतरीवाला मंदिर में श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन की ओर से आयोजित सिद्धचक्र मण्डल विधान पण्डित लालजीरामजी विदिशा के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. कपूरचन्दजी कौशल एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रतिदिन प्रवचन तो चल ही रही थे साथ ही शिलान्यास हेतु पधारे पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के पाँच प्रवचनों से प्रभावित होकर समाज में एकता का वातावरण बना।

यह नूतन शांतिनाथ कुन्दकुन्द जिनमंदिर का निर्माण स्व.श्री मानमलजी सर्राफ की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र श्री सर्वज्ञशरण, अभयकुमार, कैलाशचन्द, बच्चनलाल, सुरेशचन्द एवं अरुणकुमार परिवार की ओर से हो रहा है। **ह्न सुनील शास्त्री**

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2006

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
गुरुवार 10 अगस्त 2006	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
शुक्रवार 11 अगस्त 2006	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
शनिवार 12 अगस्त 2006	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्धयुपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।